कमोडिटी ऑप्शंस

के बारे में जानकारी

MCX
METAL & ENERGY
Trade with Trust

MCX INVESTOR (CLIENT) PROTECTION FUND

क्या आप जानते हैं?

ऑप्शंस...

- एक तरह से कीमतों में बदलाव से सुरक्षा देते हैं, इसीलिए ये हेजर्स के सबसे अधिक उपयोगी हैं।
- सिर्फ एक बार फीस/प्रीमियम का भुगतान कर खरीदे जा सकते हैं।
- ग्राहकों के पास कोई भी दैनिक मार्जिन कॉल्स नहीं होती।
- खरीदार का सर्वाधिक जोखिम दिए गए प्रीमियम तक ही सीमित होता है।
- ग्राहक इस बीच किसी अनुकूल कीमत परिवर्तन का भी लाभ उठा सकता है।

This booklet is not intended as professional counsel or investment advice, and is not to be used as such. While the exchange has made every effort to assure the accuracy, correctness and reliability of the information contained herein, any affirmation of fact in the booklet shall not create an express or implied warranty that it is correct. This booklet is made available on the condition that errors or omissions shall not be made the basis for any claims, demands or cause of action. MCX shall also not be liable for any damage or loss of any kind, howsoever caused as a result (direct or indirect) of the use of the information or data in this booklet .

कमोडिटी वायदा और ऑप्शंस में कारोबार करने से पहले जोखिम डिस्क्लोजर दस्तावेज (आरडीडी) सावधानीपूर्वक पढ़ें

ऑप्शंस के बारे में जानिये

ऑप्शंस कॉन्ट्रेक्ट्स क्या होते हैं?

ऑप्शंस डेरिवेटिव्स इंस्ट्रूमेंट होते हैं, जो खरीदार को निश्चित तिथि पर या इससे पहले निश्चित कीमत पर अंतर्निहित असेट/इंस्ट्रूमेंट को खरीदने या बेचने का अधिकार देता है, लेकिन बाध्य नहीं करता।

ऑप्शंस के अंतर्गत क्या आ सकता है?

ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट के तहत इक्विटी, कमोडिटी, विदेशी मुद्रा, फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट्स (वायदा अनुबंध), ब्याज दरें, रियल एस्टेट या दूसरी कोई भी असेट/इंस्ट्रूमेंट आते हैं। उदाहरण स्वरूप, गोल्ड ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट के अंतर्गत गोल्ड फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट आ सकते हैं।

ऑप्शंस की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

- ऑप्शंस के अंतर्गत खरीद एवं बिक्री के लिए ग्राहक को अधिकार देते हैं, लेकिन बाध्य नहीं करते।
- ये ग्राहक को भविष्य में खरीद या बिक्री कीमत को 'लॉक इन' करने की अनुमति देते हैं।
- ऑप्शंस एक्सचेंज-ट्रेडेड या ओवर-द-काउंटर (OTC) हो सकते हैं।



ऑप्शंस के बारे में जानिये

मान लीजिए कि मैथ्यू एक महीने के बाद अब्दुल से एक कमोडिटी खरीदना चाहता है, लेकिन वह इसकी कीमत आज ही तय करना चाहता है। मोलभाव के बाद, मैथ्यू अब्दुल के साथ एक 'ऑप्शन' समझौता करता है। इसके तहत उसे एक महीने के बाद उस कमोडिटी को 10 लाख रुपए में खरीदने का अधिकार मिल जाता है। इस 'ऑप्शन' को लागू करने के लिए, मैथ्यू अब्दुल को 10,000 रुपए की एक छोटी-सी रकम देता है। एक महीने बाद, इनमें से दो परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं:

1. कमोडिटी की कीमत बढ़ जाए

चूंकि मौजूदा कीमत ज्यादा है, ऐसे में मैथ्यू अब्दुल के साथ 10 लाख रुपए के सहमत मूल्य पर कमोडिटी खरीदने के लिए 'ऑप्शन' का इस्तेमाल करना चाहेगा।

2. कमोडिटी की कीमत नीचे गिर जाए

चूंकि कीमत गिर गई है, ऐसे में मैथ्यू के लिए बेहतर होगा कि वह समझौते से अलग हट कर बाहर से कमोडिटी खरीद ले। इस प्रकार, वह 'ऑप्शन' समझौते का उपयोग नहीं करेगा और कमोडिटी को बाहर से खरीद लेगा। इस परिस्थिति में, मैथ्यू को अधिकतम 10,000 रुपए का ही नुकसान होगा। यह वही रकम है, जो उसने 'ऑप्शन' समझौते के वक्त अदा की थी।

नोट: अब्दुल से खरीदारी करना मैथ्यू का अधिकार तो है, लेकिन वो इसके लिए बाध्य नहीं है। दूसरी ओर यदि मैथ्यू ऑप्शन का प्रयोग करता है तो अब्दुल बेचने के लिए बाध्य होगा।

अब्दुल - मैं एक निश्चित रकम (ऑप्शन प्रीमियम) पर तुम्हें एक महीने के भीतर (अंतिम तिथि) १० लाख रुपए (स्ट्राइक प्राइस) में कमोडिटी खरीदने के लिए ऑप्शन (कॉल ऑप्शन) दे सकता हूं।

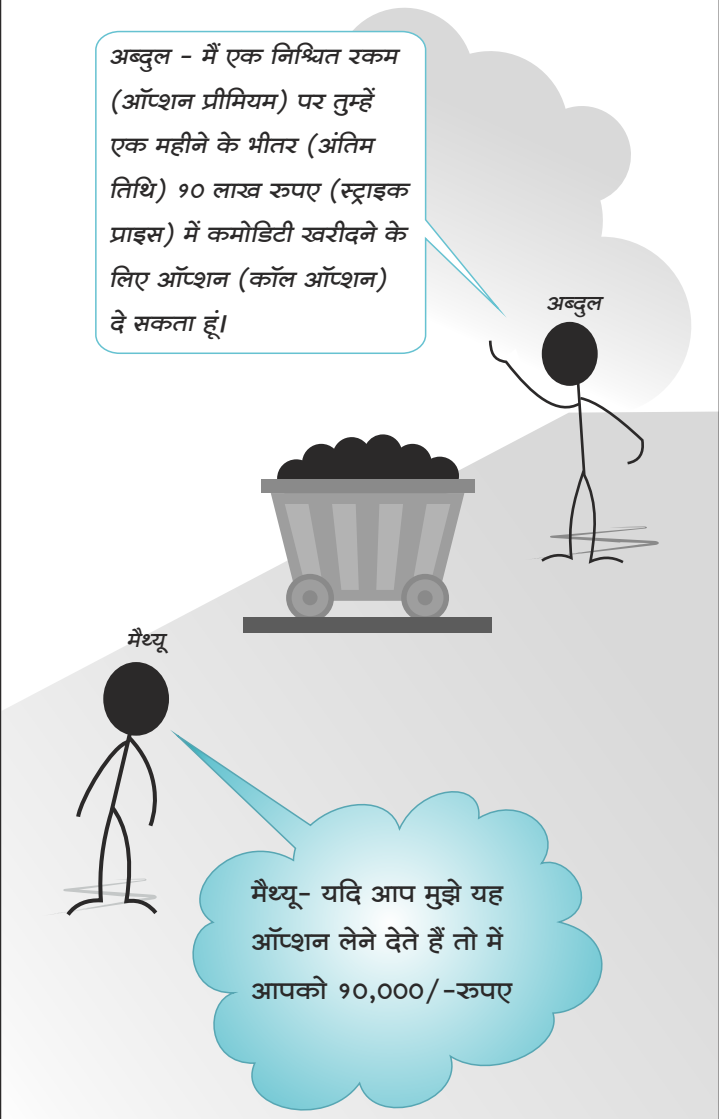



बाय / लॉन्ग का मतलब कमोडिटी ऑप्शंस कॉन्ट्रेक्ट की खरीद होती है। जो ऑप्शन को खरीदता है वह ऑप्शन बायर / होल्डर होता है।

आखिरी दिन जब तक ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट वैध होगा।

स्ट्राइक प्राइस वह कीमत होती है जिस पर अंतर्निहित (कमोडिटी फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट) खरीदा या बेचा जा सकता हो।

प्रीमियम वह कीमत होती है, जो ऑप्शन खरीदार ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट खरीदने के लिए ऑप्शन विक्रेता को अदा करता है।



सेल / शॉर्ट का मतलब कमोडिटी ऑप्शन्स कॉन्ट्रेक्ट की बिक्री होती है। जो ऑप्शन बेचता है उसे ऑप्शन राइटर / सेलर करते हैं।

ओपन इंट्रेस्ट: ओपन या आउटस्टैंडिंग (जो बंद या डिलिवर्ड नहीं किया गया हो) आप्शंस कॉन्ट्रेक्ट की कुल संख्या जो कि किसी भी समय पर मौजूद हो।

उपयोग: मूल कमोडिटी को डिलिवर करने / डिलिवरी लेने के लिए ऑप्शन बायर का निर्णय। केवल खरीदार को ऑप्शन उपयोग करने का अधिकार है।

असाइनमेंट: जब ऑप्शन धारक ऑप्शन का उपयोग करता है, तो इसकी जिम्मेदारी विक्रेता पर होती है, वह स्ट्राइक प्राइस पर मूल कमोडिटी को खरीदने / बेचने के लिए बाध्य है।

ऑप्शंस को कैसे वर्गीकृत करेंगे

अ. धारक के अधिकार के आधार पर



कॉल ऑप्शन

कॉल ऑप्शन, ऑप्शन के खरीदार (धारक) को पूर्व निर्धारित कीमत पर अंतिम तिथि या उससे पहले अंतर्निहित कमोडिटी (उदाहरण स्वरूप एक कमोडिटी फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट) को खरीदने का अधिकार देती है।

उदाहरण: कॉल ऑप्शन को खरीदना - कीमतों में वृद्धि के जोखिम के सामने हेज करना (स्टॉक करना)

- 25 अक्टूबर को, एक ज्वेलर MCX गोल्ड कॉल 'ऑप्शन ऑन फ्यूचर्स' खरीदता है।
- अंतर्निहित: MCX गोल्ड दिसंबर फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट
- ऑप्शन समाप्ति तिथि: 28 नवंबर
- स्ट्राइक प्राइस: ₹30,000
- ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट: ऑप्शन समाप्ति पर अंतर्निहित MCX गोल्ड फ्यूचर्स को 30,000 रुपए कीमत पर खरीदने का अधिकार देता है।

कब यह अधिकार इस्तेमाल के लिए मूल्यवान हो जाएगा?

- ऑप्शन समाप्ति के समय अंतर्निहित गोल्ड फ्यूचर्स की कीमत 30,000 रुपए से ऊपर हो।
- ऑप्शन की समाप्ति पर यदि गोल्ड फ्यूचर्स की कीमत 30,000 रुपए से नीचे चली जाती है, तब कॉल ऑप्शन खरीदार उसके ऑप्शन को बेकार जाने दे सकता है। क्योंकि वह अंतर्निर्हित गोल्ड फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट को खरीदने के लिए बाध्य नहीं है।

ऑप्शंस को कैसे वर्गीकृत करेंगे

अ. धारक के अधिकार के आधार पर

पुट ऑप्शन

पुट ऑप्शन के ग्राहक (धारक) को एक निश्चित कीमत पर समाप्ति की तारीख या उससे पहले अंतर्निहित (उदाहरण के लिए कमोडिटी फ्यूचर कॉन्ट्रेक्ट) को बेचने का अधिकार देता है।

उदाहरण: पुट ऑप्शन खरीदना - कीमतों में गिरावट के जोखिम के सामने हेज करना

- 25 अक्टूबर को एक रूई (कॉटन) किसान MCX कॉटन पुट 'ऑप्शन ऑन फ्यूचर्स' खरीदता है।
- अंतर्निहित: MCX कॉटन नवंबर फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट
- ऑप्शन समाप्ति तिथि: 21 नवंबर
- स्ट्राइक प्राइस: 20,000 रुपए
- ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट: अंतर्निहित MCX कॉटन फ्यूचर्स को ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट की समाप्ति पर 20,000 रुपए कीमत पर बेचने का अधिकार



कब यह अधिकार इस्तेमाल के लिए मूल्यवान हो जाएगा?

- केवल जब अंतर्निहित कॉटन फ्यूचर्स 20,000 से नीचे चला जाए।
- यदि कॉटन फ्यूचर्स की कीमतें 20,000 रुपए से ऊपर चली जाएं, तो पुट ऑप्शन ग्राहक अंतर्निहित को बेचने के लिए बाध्य नहीं है। वह अपने ऑप्शन को यूं ही बेकार जाने दे सकता है।

आप्शंस का वर्गीकरण

उपयोग के आधार पर

- अमेरिकन: अमेरिकन स्टाइल ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट में, ऑप्शन का ग्राहक ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट की खरीद तिथि से लेकर समाप्ति की तिथि के बीच किसी भी वक्त ऑप्शन के उपयोग का चयन कर सकता है।

  चूंकि यह निवेशक को अधिक मात्रा में लचीलापन प्रदान करता है, ऐसे में कभी-कभी इसका प्रीमियम यूरोपियन स्टाइल ऑप्शन से ज्यादा होता है।

- यूरोपियन: यूरोपियन स्टाइल ऑप्शन कॉन्ट्रेक्ट में, ऑप्शन का ग्राहक कॉन्ट्रेक्ट की समाप्ति की तारीख पर ही अपने ऑप्शन का उपयोग कर सकता है।

  यह निवेशक को अमेरिकन स्टाइल ऑप्शन के समान लचीलापन उपलब्ध नहीं कराता।

13 जून, 2017 को कमोडिटी फ्यूचर्स ऑप्शंस पर जारी SEBI का परिपत्र- प्रोडक्ट डिजाइन एवं रिस्क मैनेजमेंट फ्रेमवर्क के अनुसार, कमोडिटी ऑप्शंस यूरोपियन स्टाइल के साथ शुरू होंगे।

ऑप्शंस मार्केट में हिस्सा लेन वाले और उनके लिये बाजार में पे-ऑफ

भागीदार	लाभ (बढ़ने की क्षमता)	हानि (घटने की क्षमता)
कॉल होल्डर / बायर	असीमित (स्ट्राइक प्राइस से ऊपर कीमत में वृद्धि की सीमा तक)	सीमित (अदा किए गए प्रीमियम तक)
पुट होल्डर / बायर	व्यावहारिक रूप से असीमित (अंतर्निहित की कीमत शून्य हो जाने की सीमा तक)	सीमित (अदा किए गए प्रीमियम तक)
कॉल राइटर / सेलर	सीमित (प्राप्त हुए प्रीमियम तक)	असीमित (स्ट्राइक प्राइस के ऊपर कीमत में वृद्धि की सीमा तक)
पुट राइटर / सेलर	सीमित (प्राप्त हुए प्रीमियम तक)	व्यावहारिक रूप से असीमित (अंतर्निहित की कीमत शून्य हो जाने की सीमा तक)

ऑप्शन धारक के विपरीत, जिनका जोखिम (ऑप्शन प्रीमियम का नुकसान) सीमित होता है। लेकिन व्याहारिक रूप से लाभ के अवसर असीमित होते हैं; एक **ऑप्शन राइटर** के जोखिम व्यावहारिक रूप से असीमित और लाभ सीमित (ऑप्शन प्रीमियम की सीमा तक) होता है।

ऑप्शन का इस्तेमाल क्यों करें?

हेजिंग: एक ऑप्शन इसके धारक को बिना किसी दायित्व के अंतर्निहित की कीमत को 'लॉक-इन' करने की सुविधा देता है ताकि कीमतों में प्रतिकूल घटबढ़ से पैदा होने वाले जोखिमों से सुरक्षित रहे।

यह एक इंश्योरेंस पॉलिसी की तरह काम करता है। प्रीमियम का भुगतान करते हुए इसे कीमतों में प्रतिकूल बदलाव के विरुद्ध सुरक्षा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऑप्शन जैसे 'पुट ऑप्शन' कॉन्ट्रेक्ट खरीद कर एक किसान कीमतों में संभावित गिरावट से स्वयं को सुरक्षित रख सकता है। यह उसे पूर्व निर्धारित कीमत पर अपनी फसल बेचने का अधिकार देता है। यह तय कीमत पर उसे बेचने का अधिकार तो देता है, लेकिन वह इसके लिए बाध्य नहीं होता।

18,000 रुपए प्रति गांठ की दर से बिक्री के लिए कॉटन पुट ऑप्शन को खरीदने पर, अपनी कॉटन के लिए मैं जो न्यूनतम कीमत प्राप्त कर सकता हूं वह होगी 18,000 रुपए प्रति गांठ।



ऑप्शन का इस्तेमाल क्यों करें?

निवेश: निवेशक अंतर्निहित की कीमतों में बदलाव का अनुमान लगाते हुए ऑप्शन ट्रेड की शुरुआत करते हैं। ऑप्शंस फायदेमंद होते हैं, क्योंकि वास्तविक खरीद के मुकाबले ये काफी सस्ते होते हैं।

ऑप्शन खरीदने के लिए एकमुश्त अग्रिम राशि का भुगतान किया जाता हे, इससे ग्राहक को संभावित गिरावट के आंकलन में मदद मिलती है।

गोल्ड ऑप्शन खरीदने के लिए प्रीमियम की छोटी राशि का भुगतान किया जाता है। इससे मैं सोने में बड़ा निवेश कर सकता हूं। यदि कीमतों में जितना मैंने सोचा था, उतना बदलाव नहीं होता तो में ऑप्शन को ऐसे ही जाने दूंगा। यहां सिर्फ प्रीमियम का नुकसान होगा।



ऑप्शंस किस प्रकार फ्यूचर्स से अलग है?

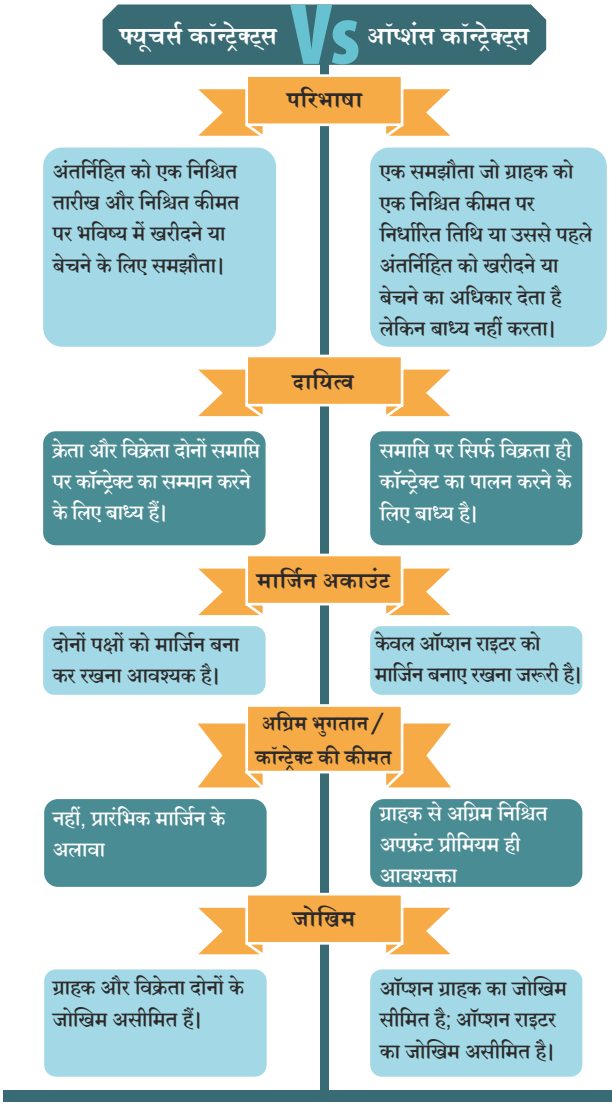

ऑप्शन ट्रेडिंग में मनी-नेस क्या है?

मनीनेस ऑप्शन ग्राहक को बताता है कि क्या समझौते को पूरा करना फायदेमंद होगा।

इन-द-मनी (ITM): (लाभ)

कॉल ऑप्शन- अंतर्निहित कीमत स्ट्राइक प्राइस से ज्यादा है।

पुट ऑप्शन - अंतर्निहित कीमत स्ट्राइक प्राइस से कम है।

आउट ऑफ द मनी (OTM): (हानि)

कॉल ऑप्शन- अंतर्निहित कीमत स्ट्राइक प्राइस से कम है।

पुट ऑप्शन- अंतर्निहित कीमत स्ट्राइक प्राइस से ज्यादा है।

एट द मनी (ATM): (न लाभ-न हानि)

अंतर्निहित कीमत स्ट्राइक प्राइस के बराबर है। **SEBI** के दिशानिर्देश के अनुसार, कमोडिटी ऑप्शन सीरीज का स्ट्राइक प्राइस अंतर्निहित कमोडिटी फ्यूचर्स के डेली सेटलमेंट प्राइस (**DSP**) के करीब हो तो ये **ATM** ऑप्शन सीरीज है।

क्लोज टू द मनी (CTM)

SEBI के दिशानिर्देशों के मुताबिक **2** ऑप्शन सीरीज के साथ **CTM** ऑप्शन सीरीज सहित एटीएम के ठीक ऊपर और नीचे के स्ट्राइक प्राइस 'क्लोज टू द मनी' (सीटीएम) ऑप्शन सीरीज हैं।

यदि **DSP 2** स्ट्राइक प्राइस के बीच है, साथ-साथ **2** ऑप्शन सीरीज जिनके पास **DSP** के ठीक ऊपर स्ट्राइक प्राइस है साथ ही **2** ऑप्शन सीरीज जिनके पास **DSP** के ठीक नीचे स्ट्राइक प्राइस है वे **CTM** सीरीज हैं।

ऑप्शंस की कीमत कैसे तय होती है?

फ्यूचर्स पर ऑप्शंस की कीमत कैसे तय होती है?

ऑप्शंस की कीमत कई मॉडल्स से तय होती है। फ्यूचर्स में कमोडिटी ऑप्शन की कीमत तय करने का सबसे लोकप्रिय तरीका ब्लैक-76 मॉडल है।

ब्लैक 76 मॉडल के अनुसार:

$$\text{कॉल} = e^{-rt}\,[F*N(d1) - K*N(d2)]$$

$$\text{पुट} = e^{-rt}\,[K*N(-d2) - F*N(-d1)]$$

$$d1 = \frac{\ln\left(\frac{F}{K}\right) + \left(\frac{\sigma^2}{2}\right)t}{\sigma\sqrt{t}} \qquad d2 = d1 - \sigma\sqrt{t}$$

कहां,

F = मौजूदा अंतर्निहित फ्यूचर्स प्राइस

K = ऑप्शन का स्ट्राइक प्राइस

t = ऑप्शन की समाप्ति खत्म होने तक का समय वर्षों में

r = रिस्क फ्री इंट्रेस्ट रेट

σ = अंतर्निहित फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट की अस्थिरता

N (.)= स्टैंडर्ड नॉर्मल क्युमुलेटिव डिस्ट्रिब्यूशन फंक्शन

आप्शंस कीमतों के दो घटक होते हैं:

<u>इंट्रिंसिक वैल्यू</u>:

यह ऑप्शन प्रीमियम का इन-द-मनी भाग होता है। कॉल ऑप्शन के लिए यह स्ट्राइक प्राइस से अंतर्निहित फ्यूचर्स प्राइस अधिक होता है और पुट ऑप्शन के लिए यह अंतर्निहित फ्यूचर्स प्राइस से स्ट्राइक प्राइस अधिक होता है।

<u>टाइम वैल्यू</u>:

यह ऑप्शन प्रीमियम और ऑप्शन की इंट्रिंसिक वैल्यू के बीच का अंतर होता है।

ऑप्शंस कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक (ब्लैक-76 मॉडल)

कारकों	वृद्धि		कमी	
	कॉल प्राइस होगा	पुट प्राइस होगा	कॉल प्राइस होगा	पुट प्राइस होगा
अंतर्निहित कीमतें	↑	↓	↓	↑
समाप्ति तक का समय	↑	↑	↓	↓
अस्थिरता	↑	↑	↓	↓
इंट्रेस्ट रेट्स	↓	↓	↑	↑
स्ट्राइक प्राइस	↓	↑	↑	↓



अंतर्निहित कमोडिटी फ्यूचर्स प्राइसेज़ को प्रभावित करने वाले कारकों

अंतर्निहित की कीमतें, जो कि कमोडिटी फ्यूचर्स है, ये कई कारकों से प्रभावित होते हैं। उनमें से कुछ कारकों में शामिल हैं:

- कमोडिटी का मौसम
- मांग आपूर्ति का संतुलन
- वैश्विक कारकों
- नीतिगत हस्तक्षेप
- वैश्विक डाटा प्रकाशन, जैसे,
  - यू.एस.फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में बदलाव
  - यू.एस. जॉब्स रिपोर्ट
  - चीन की विकास दर
  - ऑयल एवं गैस की इंवेंट्री का स्तर, इत्यादि

ग्रीक्स क्या हैं?

ग्रीक्स

1. ग्रीक्स मुख्यत: चार कारकों के संबंध आप्शन कीमतों की संवेदनशीलता को मापते हैं:
2. अंतर्निहित (फ्यूचर्स कॉन्ट्रेक्ट) की कीमतों में बदलाव, आमतौर पर इसे **डेल्टा(δ)** के रूप में भी जाना जाता है।
3. समयावधि में बदलाव, आमतौर पर इसे **थीटा** (θ) के रूप में भी जाना जाता है।
4. अस्थिरता में बदलाव, जिसे आमतौर पर **वेगा**(ν) के रूप में भी जाना जाता है।
5. इंट्रेस्ट रेट्स में बदलाव, इसे आमतौर पर **न्हो** (ρ) भी कहा जाता है।

अंतर्निहित संपत्ति की कीमतों में बदलाव के लिए डेल्टा की संवेदनशीलता को **गामा** (γ) कहा जाता है

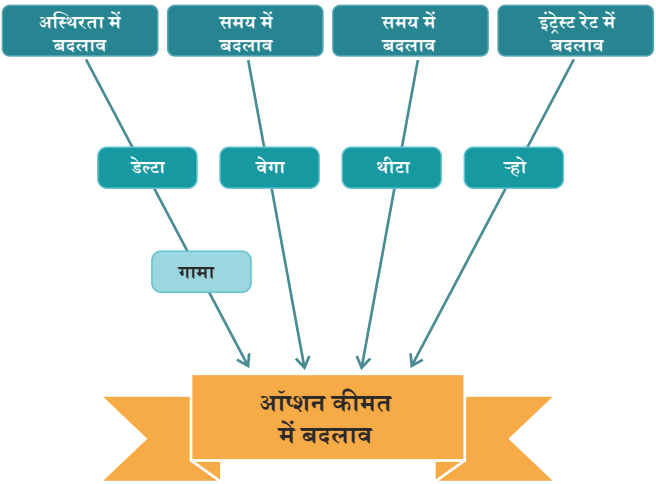

कमोडिटी ऑप्शन पे-ऑफ

<u>कॉल आप्शंस</u>

सोनल उम्मीद कर रही है कि अगले दो महीनों के भीतर सोने की कीमतों में तेजी आएगी।

संभावित मूल्य वृद्धि के जोखिम को हेज करने के लिए, वह 150 रुपए प्रति 10 ग्राम के प्रीमियम के लिए मालती से सोने के फ्यूचर्स पर 3 माह के एक्सपायरी के साथ कॉल ऑप्शन 30,000 रुपए प्रति दस ग्राम के हिसाब से खरीदती है।

दो परिस्थितियां संभव हैं:

1. **सोने की कीमत 30,000 रुपए से नीचे चली जाए:**
   सोनल अपने ऑप्शन पर कुछ नहीं कर पाएगी और इसलिए 150 रुपए प्रीमियम भुगतान का नुकसान होगा (ग्राफ का लाल हिस्सा)। यह मालती का लाभ होगा।

2. **सोने की कीमत 30,000 रुपए से अधिक हो जाए:**
   जब कीमत 30,000 रुपए से अधिक होगी तो सोनल के पास पैसा आएगा और उसे 30,150 रुपए (स्ट्राइक प्राइस + प्रीमियम) के ऊपर शुद्ध लाभ होगा।

   ऑप्शन खरीदार के रूप में, उसकी लाभ क्षमता असीमित है (ग्राफ का हरा हिस्सा)।

   दूसरी ओर, मालती को नुकसान होना शुरू हो जाता है, 30,000 से अधिक जितना दाम बढ़ता है उसका नुकसान भी उतना अधिक होता है।

कॉल ऑप्शन बायर्स- पे ऑफ

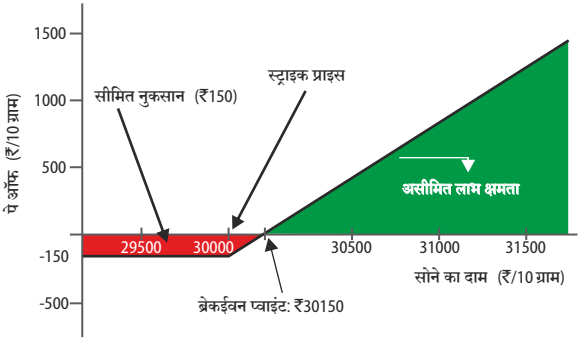

पुट ऑप्शन

संजय से पास गोल्ड ज्वैलरी का स्टॉक है और उसे डर है कि दो महीने के भीतर दाम गिर जाएंगे। इस जोखिम को कम करने के लिए, वह 150 रुपए प्रति 10 ग्राम के प्रीमियम के लिए मनोज से फ्यूचर्स पर सोने का पुट ऑप्शन 29,000 रुपए प्रति 10 ग्राम के स्ट्राइक प्राइस पर खरीदता है।

दो परिस्थितियां संभावित हैं:

1. सोने की कीमत 29,000 रुपए से नीचे चली जाती है। संजय को सोने की कीमत शून्य हो जाने तक पुट ऑप्शन के लिए मिलने वाले पे ऑफ में बढ़ोतरी का लाभ मिलेगा।

इस प्रकार 28,850 रुपए प्रति दस ग्राम (स्ट्राइक प्राइस-ऑप्शन प्रीमियम) उसका अधिकतम लाभ हो सकता है।

पुट ऑप्शन बायर्स - पे ऑफ

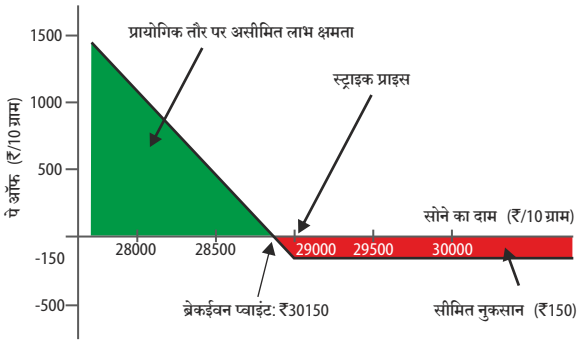

दूसरी ओर, मनोज का नुकसान, सोने की कीमत शून्य होने तक बढ़ता रहेगा।

2. सोने की कीमत 29,000 रुपए से ऊपर जाती है। संजय ऑप्शन पर कुछ नहीं कर पाएगा और उसका अधिकतम नुकसान प्रीमियम भुगतान है, जो कि 150 रुपए है। यह मनोज का लाभ होगा।

इन दोनों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि ऑप्शन खरीदार के पास ऊपर की तरफ जाने की अधिक, परंतु नीचे की तरफ जाने की सीमित संभावना है। हालांकि, ऑप्शन विक्रेता के पास इसका उल्टा होता है: उनके पास ऊपर जाने के सीमित लेकिन कीमत में बदलाव से नीचे की तरफ जाने की अधिक संभावना होती है।

(ऊपर दिए गए उदाहरण में ब्रोकरेज, टैक्स आदि से संबंधित ट्रेडिंग लागत को शामिल नहीं किया गया है।)

कुछ प्रमुख वैश्विक एक्सचेंज



कुछ लोकप्रिय ऑप्शन

स्ट्रैडल:

- समान अंतर्निहित के लिए पुट और कॉल को समान स्ट्राइक प्राइस और समाप्ति तिथि के लिए खरीदना।
- इसका उपयोग तब करते हैं जब कीमतों में बदलाव का अनुमान तो हो लेकिन बदलाव की दिशा पता न हो।

स्ट्रैंगल:

- समान अंतर्निहित और समाप्ति तिथि के लिए एक साथ आउट-ऑफ-द-मनी पुट और आउट-ऑफ-द-मनी कॉल खरीदना।
- जब अंतर्निहित की कीमत अन्य दिशा में जाती है तब ये बेहतर काम करता है।

कमोडिटी ऑप्शन ट्रेडिंग के साथ



ट्रेडिंग रणनीतियां

बुल कॉल स्प्रेड:

- समान अंतर्निहित और समाप्ति तिथि पर एक स्ट्राइक प्राइस पर कॉल ऑप्शन खरीदना और उसी समय ऊंचे स्ट्राइक प्राइस पर कॉल ऑप्शन को बेचना।

  इसका उपयोग करते हैं जब किसी को मामूली तेजी का अनुमान हो ।

बेर पुट स्प्रेड:

- समान अंतर्निहित और समाप्ति तिथि के लिए एक स्ट्राइक प्राइस पर पुट ऑप्शन खरीदना और उसी समय लोअर स्ट्राइक प्राइस पर पुट ऑप्शन को बेचना।
- इसका उपयोग तब करते हैं जब किसी को मामूली मंदी का अनुमान हो।

FLEXIBILITY JUST ENTERED THE MARKET



OPTIONS ARE HERE

MCX
METAL & ENERGY
Trade with Trust

MCX INVESTOR (CLIENT) PROTECTION FUND

प्रकाशक: डिपार्टमेंट ऑफ रिसर्च
डिजाइन: ग्राफिक्स टीम, डिपार्टमेंट ऑफ कम्युनिकेशंस

कारपोरेट पता

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड

एक्सचेंज एसक्वायर, सुरेन रोड, चकाला, अंधेरी (पूर्व), मुंबई 400 093, भारत.
टेलीफोन 91-22-6731 8888, सीआयएन नं. : L51909MH2002PLC135594
info@mcxindia.com, www.mcxindia.com

मल्टी कमोड़िटी एक्सचेंज इन्वेस्टर (क्लायन्ट) प्रोटेक्शन फंड द्वारा सार्वजनिक हित में जारी

©MCX 2018. All rights reserved. No part of this document may be reproduced, or transmitted in any form, or by any means- electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, or otherwise - without explicit prior permission of MCX.

Follow us @MCXIndialtd